

brAhmIvidyA

——
ब्राह्मीविद्या

——
Document Information



Text title : brAhmIvidyA

File name : brAhmIvidyA.itx

Category : misc

Location : doc_z_misc_general

Transliterated by : Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net

Proofread by : Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net, NA

Description-comments : Path Pustakam 1934 Srinagar Kashmir Mercantile Press

Source : Adityapurana

Latest update : August 28, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 28, 2021

sanskritdocuments.org



—
—
ब्राह्मीविद्या
—
—

अथ ब्राह्मीविद्या ॥

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर मोहं भिन्धि
रजस्तमसी भिन्धि प्राकृतं पाशजालं सावरणं परिहर
सत्त्वं ग्रहाण पुरुषोत्तमोऽसि सोमसूर्यानल प्रवर
परमधामन्ब्रह्मविष्णुमहेश्वररूप सृष्टिस्थितिसंहारकारक
भ्रूमध्य निलय तेजोऽसि धामासि महात्मन्
ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् ॐ तत्सत्
ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्
नृषद्वरसदृतसद्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्
परम्ब्रह्मस्वरूप सर्वगत सर्वशक्ते सर्वेश्वर सर्वग्रन्थिभेदनं
कुरु कुरु परमपदं परामर्ष ब्रह्मद्वारं सर कुमार्गं जहि
षाद्धोशकं शरीरं त्यज शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि विमलोऽसि क्षमस्व
स्वपदमासादय स्वाहा ॥

ॐ हंसो नारायणः प्रोक्तो हंस आत्मेति निश्चितम् ।

स एवात्मा स भगवान्विष्णुस्तद्ब्रह्म सर्वगम् ॥


इमां महाब्रह्मविद्यां प्रातः काले पठेत्तु यः ।

स याति परमं स्थानं यत्र गत्वा न शोचते ॥

इति ब्राह्मीविद्या समाप्ता ॥

Encoded and proofread by Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net

pdf was typeset on August 28, 2021

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

